ISSN: 0973-0583

# बिहार के युवाओं का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन

**कुमारी निशा**

**शोधार्थी, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना**

**डॉ० रामा कान्त शर्मा**

**एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राम कृष्ण द्वारिका कॉलेज, पटना**

## सारांश

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भारतवासियों के साथ-साथ बिहारवासियों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी या ब्रिटिश सत्ता को कभी हृदय से स्वीकार नहीं किया। आजादी की लड़ाई का जब भी शंखनाद हुआ बिहार की जनता ने अविलम्ब तथा पूरी निष्ठा के साथ उसमें भाग लिया। 1857 के आन्दोलन के पूर्व तथा बाद के आन्दोलन में भी बिहार के योद्धाओं का विशिष्ट साथ रहा है। चाहे बाहावी आन्दोलन, जो 1822 में शुरू हुआ था, जिसका मुख्यालय पटना था और संथालों तथा मुण्डा आदिवासियों का विद्रोह जिसका केन्द्र बिन्दु भागलपुर तथा छोटानागपुर के पठार थे, सभी में बिहार के लोगों की भूमिका प्रमुख रही है। 1857 के सशस्त्र आन्दोलन में बिहार के लोगों ने प्रमुख रूप से भाग लिया था। जिसकी लपटें प्रांत भर में फैल गई थी। बिहार में कुँअर सिंह के नेतृत्व में शाहावाद का जगदीशपुर प्रमुख केन्द्र था। राष्ट्रीय संघर्ष के विभिन्न चरणों में यहाँ के युवाओं ने अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान किया है। वस्तुतः चम्पारण में ही महात्मा गाँधी ने भारत में नवराष्ट्रवाद एवं सत्याग्रह का पहला सफल प्रयोग किया था। यह नया राष्ट्रवाद, सत्य, अहिंसा, मानवीयता और विश्व प्रेम पर बल देने के कारण विशिष्ट था। 1942 ई० के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी बिहारी जनता खासकर युवकों एवं युवतियों ने अपना सर्वस्य न्यौछावर करने में भी पीछे नहीं रहे। 1942 में जब भारत छोड़ो आन्दोलन छिड़ा था और अंग्रेजों में सभी महत्वपूर्ण एवं बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर जेलों में बंद कर दिया गया था तब आन्दोलन का कमान नवयुवकों एवं छात्र-छात्रों ने सम्भाल लिया। यह आन्दोलन पटना के साथ-साथ मुजफ्फरपुर, सारण, मुंगेर, गया, पूर्णिया, सुपौल, मानभूम, पलामु, आदि स्थानों में जनता के द्वारा समानान्तर सरकार का शासन चलता रहा जो बिहार के लोगों के योगदान को इंगित करता है। उपर्युक्त परिस्थितियों के आलोक में प्रस्तुत शोध पत्र में "बिहार के युवाओं का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान" के संक्षिप्त परिचय को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा सार्थक प्रयास किया गया है।

**आधार शब्दः- राष्ट्रवाद, सत्य, अहिंसा, मानवीयता, सत्याग्रह, सविनय, विश्वयुद्ध, क्रिप्स योजना, आन्दोलन**

भारतवासियों के साथ-साथ बिहार वासियों ने भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी या ब्रिटिश सत्ता को कभी भी हृदय से स्वीकार नहीं किया। जिसका प्रतिफल यह हुआ कि बिहार के लोगों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरणों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आजादी की लड़ाई का जब भी शंखनाद हुआ बिहार ने अविलम्ब तथा पूरी निष्ठा के साथ उसमें भाग लिया। 1857 के संघर्ष का मुख्य केन्द्र बिन्दु तो बाबू कुँअर सिंह के नेतृत्व में बिहार का 'जगदीशपुर' ही था। राष्ट्रीय संघर्ष के विभिन्न चरणों में इसने अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान किया हैं। 1857 के सशस्त्र आन्दोलन में बिहार के लोगों ने प्रमुख रूप से भाग लिया था। राष्ट्रीय संघर्ष के विभिन्न चरणों में भी बिहार ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

चाहे असहयोग आन्दोलन हो या 1930 का सविनय अवज्ञा आन्दोलन इनमें बिहार के लोगों खासकर नवयुवकों एवं स्कूली छात्र-छात्राओं की महत्वपूर्ण सहभागिता एवं योगदान देखने को मिलता है। 1942 ई० का भारत छोड़ो आंदोलन आधुनिक भारतीय इतिहास की एक प्रमुख घटना है। इस विशाल क्रांति के प्रसंग में, भारतीय स्वाधीनता की सिद्धि के लिए, जो महान संघर्ष किया गया, उसमें बिहार के युवाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। यह

आन्दोलन पटना के साथ-साथ शाहाबाद, मुजफ्फरपुर, सारण, मुंगेर, गया, पुर्णिया, सुपौल, मानभूम, पलामु आदि स्थानों में जनता के द्वारा समानान्तर सरकार का शासन चलता रहा।

1942 ई॰ की अगस्त क्रांति की पृष्ठभूमि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही तैयार हो चुकी थी। 7 दिसम्बर, को पर्ल हार्वर स्थित अमेरिकी विशाल नौसैनिक अड्डे एवं 10 दिसम्बर, 1941 ई॰ को ब्रितानी युद्धपोत प्रिन्स ऑफ वेल्स तथा रिपल्स सैनिक अड्डा तथा हांगकांग पर जापानियों ने आक्रमण कर ध्वस्त कर दिया। 15 जनवरी, 1942 ई॰ को सिंगापुर ने दक्षिण-पूर्वी एशिया में दुर्विजेय ब्रितानी नौसैनिक अड्डा 7500 अंग्रेज एवं भारतीय सैनिकों के साथ आत्म समर्पण कर दिया।[1] 1 अप्रैल को जेनरल वावेल ने प्रधान सेनापति को एक संदेश में कहा "यदि हमें आवश्यक साज-सामान की आपूर्ति करने के गंभीर प्रयत्न नहीं किए जाते तो संभवत: हिन्द-महासागर और बंगाल की खाड़ी पर फिर से नियंत्रण प्राप्त करना शायद संभव नहीं होगा और भारत से हमें शायद हाथ धोना पड़े।"

जपानी सेना के भारत के सीमांत तक पहुँच जाने के फलस्वरूप देश में गहरी चिंता हो रही थी। इसी क्रम में सुरक्षा की चिंता मुख्य रूप से उन लोगों को अधिक होने लगी, जिनके परिजन बर्मा आदि देशों में रहते थे। शाहाबाद के जिलाधिकारी का पत्र इस पर विशेष प्रकाश डालता है, "सुदूर पूर्व की स्थिति से गहरी चिंता हो रही है। रंगून पर बम गिराये गए हैं, इससे व्यापक आतंक फैल गया है। इस जिला के काफी लोगों के सगे-संबंधी बर्मा में रहते हैं। शाहाबाद के अनेक जवान बर्मा पुलिस तथा सुदूरपूर्व के अन्य स्थानों पर काम करते हैं। आरा के राय बहादुर हरिहर प्रसाद सिन्हा, जिनकी एक चीनी मील बर्मा में है, विमान द्वारा आने की आशा कर रहे थे। उन्हें विमान नहीं मिला। उनके कुछ लोग आज मुझसे मिले। उनसे मुझे मालूम हुआ कि वृद्ध राय बहादुर आसाम होकर स्थल मार्ग से भारत आने का प्रबंध कर रहे हैं। यद्यपि आसाम और बर्मा के सीमावर्ती क्षेत्र में कुछ दूर तक सड़क नहीं है। राय बहादुर और उनके साथ के लोगों को उनके अपने आदमी एवं उनके संबंधी आज ही आसाम के बर्मा सीमांत पर उनको लाने के लिए कुछ अन्य लोगों को भेज रहे हैं। इस शाहाबाद जिला के कुछ प्रमुख व्यापारियों के कार्यालय कलकत्ता में है। ये वहाँ से अपने संबंधियों को हटा रहे हैं। लोग डर रहे हैं कि कलकत्ता जमशेदपुर और अन्य इस्पात एवं कोयला उत्पादन केंद्रों पर जल्द ही बमबाजी होगी।"[2]

इस प्रकार बिहार के लोगों में व्याकुलता और डर की स्थिति पनपने लगी और वैसे स्थानों से लोग भागने लगे थे, जहाँ जापानी आक्रमण का खतरा मंडरा रहा था। वास्तव में एक तत्कालीन सरकारी रिपोर्ट के अनुसार "दक्षिण पूर्व एशिया एवं वर्मा की घटनाओं ने भारत पर किसी आक्रमण का सामना करने की अंग्रेज सरकार की क्षमता में विश्वास हिला दिया था।"[3] भारत में भी पीछे हटती हुई सेना के द्वारा सर्वविध्वंस की नीति कार्यान्वित किए जाने की आशंका तथा मलाया, सिंगापुर और रंगून से भारतीयों की तुलना में यूरोपियों को वापस लाने के पक्षपातपूर्ण रवैया आदि के कारण विदेशी आधिपत्य के विरूद्ध भारतीयों में असंतोष और भी तीव्र हो गया था। इसके अलावा रूपया के अवमूल्यन से महँगाई बढ़ने लगी। आवश्यक सामानों की आपूर्ति में कमी आने से लोगों में ब्रिटिश सत्ता से मोहभंग होने लगा।

भारत के लोगों का समर्थन को हासिल करने के लिए ब्रिटेन ने क्रिप्स मिशन भेजा, परंतु क्रिप्स मिशन को भारत में संवैधानिक गतिरोध दूर करने में सफलता नहीं मिली। भारत के सर्वाधिक नरमदलीय नेता सहित प्रत्येक दल या गुट ने इसकी प्रस्तावना को अस्वीकृत कर दिया। गाँधी जी इसे 'उत्तर दिनांकित चेक' की संज्ञा दी।[4] पंडित नेहरू ने इस पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहा कि "क्रिप्स योजना ने अनेक प्रांतों एवं राज्यों की संभावना प्रस्तुत कर दी है।"[5]

इस दौरान देश भयंकर असमंजस की स्थिति में था। जब लोगों के मन में भारी अस्त-व्यस्तता भरी हो तो सामूहिक आंदोलन दूर नहीं हो सकता है। इस बीच महात्मा गाँधी के भाषण और लेखों में कुछ काल से अधिक व्याकुलता तथा सांकेतिक प्रतिरोध के स्थान पर संघर्ष के संकेत भरे होते थे। इनका जनक्रांति के लिए मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार करने में बहुत योगदान था।[6] इस समय युद्ध भारत के दरवाजे तक आ पहुँचा था। 6 जुलाई, 1942 ई॰ को इन परिस्थितियों पर विचार करने के लिए वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी की एक बैठक हुई। यहाँ 14 जुलाई, 1942 ई॰ को सुप्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

बंबई में अखिल भारतीय कॉग्रेस कमिटी का अधिवेशन 7 अगस्त, 1942 ई॰ को शुरू हुआ और 8 अगस्त तक चला। इस ऐतिहासिक अधिवेशन में उपर्युक्त प्रस्ताव कार्यकारिणी की ओर से प्रस्तुत किया गया और भारी बहुमत से स्वीकृत हुआ।[7] केवल मुट्ठी भर साम्यवादी या उसके प्रति सहानुभूति रखनेवाले प्रतिनिधियों ने इसके विरोध में हाथ उठाया। गाँधीजी ने प्रस्ताव पारित होने के उपरांत भाषण करते हुए जनता के नाम 'करो या मरो' का महामंत्र दिया। इन्होंने कहा कि हम या तो भारत को स्वतंत्र करेंगे अथवा इसके लिए संघर्ष में अपने प्राणों की बलि देंगे। इन्होंने भाषण के क्रम में कहा कि 'संघर्ष शुरू करने के पूर्व वे वायसराय को एक पत्र लिखेंगे और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करेंगे। यदि वायसराय उनसे मिलने को तैयार होंगे तो वे वायसराय से मिलेंगे।[8]

इस आन्दोलन की संकल्पना पारंपरिक सत्याग्रह के रूप नहीं की गई थी। यह तो, 'निर्णायक लड़ाई' या 'एक खुला विद्रोह' का आगाज था, जो तेज और छोटी लड़ाई नहीं थी यह सम्पूर्ण लड़ाई थी, जो प्रचंड ज्वाला में सम्पूर्ण देश को झोंक देने की युवाओं का आवाहन् थी। वे बारंबार अंग्रेजो से कहते थे कि ''भारत को ईश्वर के या अराजकता के भरोसे छोड़ दें। इस व्यवस्थित, अनुशासित अराजकता को जाना ही होगा और इसके परिणामस्वरूप यदि पूर्ण अराजकता आये तो मैं उस खतरे को उठाने के लिए तैयार हूँ।"[9] इस संघर्ष में उस प्रत्येक जन कार्रवाई को शामिल किया जाएगा जिसे 'शस्त्रहीन' विद्रोह की संज्ञा दी जा सकती है यानी आम हड़तालें, रेलों को रोकना, संचार व्यवस्था को भंग करना और संभव हो तो अंग्रेजो के सैनिक टुकड़ियों के आवागमन में बाधा डालना। गिरफ्तारियाँ देने जैसे कांग्रेस के पुराने तरीकों इस संघर्ष के लिए बहुत नरम समझा गया। "महात्मा गाँधी के भाषण एवं लेखों में कुछ काल से अधिक व्याकुलता तथा सांकेतिक प्रतिरोध के स्थान पर संघर्ष के संकेत भरे होते थे। इनका जन क्रांति के लिए मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार करने में बहुत योगदान था।"[10] गाँधी जी ने यहाँ तक मान लिया कि जनता आत्मरक्षा के लिए हथियार भी उठा सकती है। "अधिक ताकतवर और हथियारों से लैस आक्रमणकारियों के विरूद्ध शस्त्र उठाने को अहिंसक कार्रवाई माना गया है।"[11]

"गाँधी जी को इस बात का दृढ़ विश्वास हो गया था कि संघर्ष करने का समय आ गया है।"[12] हमें मूल रूप से एक भिन्न प्रकार के आन्दोलन चलाने के इस निश्चय की पुष्टि अन्य कांग्रेसी नेताओं के भाषणों एवं लेखों में भी मिलती है। राजेन्द्र बाबु के शब्दों में ''ब्रितानी जनता को परेशान करने के लिए हमारी योजना नहीं बनाई गयी थी। उसका उद्देश्य था भारत पर जो भी अपना अधिपत्य जमाना चाहे, चाहे वह अंग्रेज हो या जापानी, उसका प्रतिरोध करने को जनता में क्षमता प्रदान करना।"[13]

गाँधीजी को पत्र लिखने या वायसराय से मिलने का अवसर नहीं मिला। 9 अगस्त, 1942 के अहले सुबह ही प्रायः सभी प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। उसके बाद देश के सभी भागों में उस दिन अनेकों गिरफ्तारियाँ हुईं। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' एक सशक्त ज्वार की भांति सारे देश में फैल गया। उसने समाज के सभी वर्गों के लोगों को समेटकर उनमें देश-भक्ति की उत्कट भावना और देश के लिए मर मिटने की अदम्य लालसा पैदा कर दी।

9 अगस्त को ही बम्बई में नेताओं की गिरफ्तारी की खबर आरा शहर में पहुँची। 10 अगस्त को छात्र संघ के प्रयास से शहर में सफल हड़ताल रही। उस दिन जुलूस निकले। पं॰ प्रद्युम्न मित्र के नेतृत्व में जुलूस तमाम शहर में घुमा और वहाँ से कचहरी पहुँचा। जुलूस में शामिल विद्यार्थियों की अपील पर वकील, मुख्तार कचहरी से बाहर हो गये और बाद में मजिस्ट्रेट भी। जिला जज के इजलास में विद्यार्थियों को कामयाबी नहीं मिली। एक वकील बहस कर रहे थे- उनके मुँह पर विद्यार्थियों ने कालिख पोत दी। जुलूस में शामिल प्रदर्शनकारियों ने इजलास के फर्नीचर तोड़ डाले, शीशे फोड़ डाले और सम्राट् के टंगे चित्र को फाड़ डाला।[14]

विद्यार्थियों को जहाँ कहीं रेलगाड़ी मिली उस पर कब्जा कर लिया। इंजन को राष्ट्रीय झंडे से सजा दिया। समूची गाड़ी में आजादी के नारे अंकित कर दिए।[11] अगस्त को बक्सर में भी स्वराजी गाड़ी दिखी। गाड़ी के प्रत्येक डब्बे क्रान्ति की आग उगल रहे थे, जिसकी गर्मी कौमी नारों की आवाज के साथ-साथ चारों ओर फैल रही थी। गाड़ी एक तरह से विद्यार्थियों के दखल में थी और उनके प्रचार का साधन बन रही थी। शाहाबाद की जनता ने अपने

विद्यार्थियों से ही स्वराजी रेलगाड़ी चलानी सीखी।[15] 12 अगस्त से ही बक्सर में भी तोड़-फोड़ शुरू हो गया। डाकघर के कागज जलाये गये, थाना पर हमला हुआ। फिर जनता की भीड़ कचहरी थाने तथा अन्य सरकारी इमारतों की तरफ चली। झंडा फहराने के बाद जनता ने कचहरी से मजिस्ट्रेट को निकाल बाहर किया, उनको अपने साथ ले लिया और जहाँ-जहाँ गयी उनसे कांग्रेसी नारे लगवाती गयी।

शाहाबाद सदर थाने में फतेहपुर मठिया मिडिल स्कूल के शिक्षक तथा छात्रों ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं का साथ देकर तोड़-फोड़ के कामों को आगे बढ़ाया। नहर ऑफिस के सामान को बरबाद कर दिया और उसमें आग लगा दी। वहाँ से वे डाकघर गये और उसकी चीजों को जला दिया। फिर उनका हमला शराब की दूकान पर हुआ जो बर्बाद कर दिया गया। वहाँ से वही दल वरूही गया जहाँ के नहर ऑफिस के कागजात जला डाले गये।[16]

लसाढ़ी और वहाँ के आस-पास रहने वालों का एक दल आगे अगियांव आया। वहाँ के डाकघर के कागज को उसने जला दिया। खजाना लूटा गया, खजाने में जो नोट था उन्हें जला दिया गया। पीरो थाना में कॉलेज के लड़कों का एक जत्था आया। सबों ने मिलकर स्टेशन में आग लगा दी। डाकघर जला दिया गया। गढ़हनी से हसन बाजार तक की आरा-सहसराम लाईट रेलवे की लाईन कई जगह इन सबों ने उखाड़ फेंकी। जगदीशपुर थाने में स्कूल के लड़कों और थाने के कांग्रेस कार्यकर्त्ता एक साथ तोड़-फोड़ के कामों में लग गये। सब-रजिस्ट्री ऑफिस के सामने पुलिस इन्स्पेक्टर से उसकी पिस्तौल छीन ली गयी।

फूलकुमारी के नेतृत्व में आस-पास के लोगों का दल तोड़-फोड़ करने निकला।[17] उसने बिहिया की पुलिस चौकी, स्टेशन, डाकघर को बर्बाद कर दिया। कारीसाथ से बिहिया तक की लाइन की पटरियों को कई जगह उखाड़ दिया। इसके बाद गांवों में काम करती हुई वे गोरों द्वारा पकड़ी गयी, सजा पाकर जेल गयीं और जेल से आकर एस॰डी॰ओ॰ को चूड़ी पहनाने गयीं।

बक्सर सबडिविजन में- बक्सर, चौसा, नावानगर, डुमरांव, ब्रह्मपुर, कैसठ, इटाढ़ी, नाट, रघुनाथपुर, नियाजीपुर, डुमरी, कोरान सरैया, नया भोजपुर, वासदेवा, आथर, राजपुर, मनोहरपुर, चौगाई, सिमरी आदि जगहों में पोस्ट ऑफिस, थाना, नहर ऑफिस, शराब और गांजे की दूकानों पर हमला हुआ और वहाँ के सरकारी कागजातों को बर्बाद कर दिया गया। इन स्थानों के कांग्रेस कर्मियों ने रेल की पटरियों को भी उखाड़ा। 16 अगस्त को बक्सर सेन्ट्रल जेल तोड़ने की कोशिश हुई। जेल के फाटक पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया।

सहसराम सबडिविजन के सहसराम शहर, नासरीगंज, नोखा, डिहरी थाना, दिनारा, कुदरा, ताराडीह, मड़नपुर, दुर्गावती आदि में भी थाना, पोस्ट ऑफिस, नहर ऑफिस जलाये गये, सरकारी कागजों को नष्ट किया गया, रेल की पटरियाँ और तार काट डाले गये। सहसराम कचहरी की कार्रवाई के फलस्वरूप-कोप के रहने वाले जयराम सिंह, बचरी ग्राम निवासी जगदीश प्रसाद, आलमगंज के महंगु पासी और सहसराम के जगन्नाथ राम पनेरी गोरों की गोली से शहीद हुए।[18]

सहार, पीरो, जगदीशपुर, शाहपुर, संदेश, डुमरांव, नावानगर, राजपुर, बक्सर, सासाराम आदि थानों पर जनता ने राष्ट्रीय झंडा फहराया। राजपुर के सब-इन्सपेक्टर ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और कांग्रेस सेवक बन गया। बक्सर थाना सात दिनों तक कांग्रेस वालों के अधिकार में रहा। चेनारी भी एक हफ्ते तक कांग्रेसियों के कब्जे में रहा। 17 अगस्त को भभुआ के चाँद थाना को भी कांग्रेस सरकार की कब्जे में रहा।

डुमरांव नगर और देहातों की जनता डुमरांव थाने पर 16 अगस्त को उमड़ पड़ी। जनता पुलिस हमारा भाई है, 'इन्कलाब जिन्दाबाद'-का नारा लगा रही थी। पुलिस रिवाल्वर से गोलियाँ दनादन दागने लगी। चार व्यक्ति- कपिलमुनी कमकर, गोपाल कमकर, राम दास बढ़ई और राम दास सोनार घटना स्थल पर ही शहीद हो गये।[19]

चाँद के कार्यकर्त्ताओं ने कांग्रेस सरकार के नाम वहाँ एक केन्द्र खोला। उन्होंने न्याय विभाग का संगठन किया जिसके द्वारा गाँव-गाँव में पंचायतों को कायम किया गया। प्रचार विभाग खोला जिसके द्वारा कांग्रेस सरकार के हुक्मनामे का थाना भर में एलान होता रहा। कांग्रेस सरकार का एक गुप्तचर विभाग भी था जिसके सेवक चारों केन्द्रों में रहते और दुश्मनों की गतिविधि की सूचना चाँद की सरकार को पहुँचाते रहते।[20]

गोरों ने अपने अत्याचार के क्रम में शाहाबाद के नौसा थाने में गोरे, बलुचियों को लेकर पुलिस आयी। वहाँ एक स्त्री पर बलात्कार किया। डिहरी थाना में गोरे और पुलिस ने मिलकर कई जगह बलात्कार किये। डुमरांव थाना के ढकाइच नामक गाँव में चार स्त्रियों का बलात्कार हुआ।

अगस्त क्रांति के सन्दर्भ में शाहाबाद में सरकारी और अखबारी आंकड़ों के अनुसार 1500 व्यक्ति गिरफ्तार हुए थे।[21] शहीदों की संख्या 50 थी। शाहाबाद के 30 थानों में से 28 पर हमला हुआ था। सही रूप में जनता ने आठ थानों को अपने अधिकार में कर लिया था। इस जिले में 6 आन्दोलनकारी प्रदर्शनों पर गोलियाँ चली थी जिसमें जनता मारी गयी थी।

**निष्कर्ष:**

शाहाबाद की क्रान्तिकारी जनता का अगस्त क्रान्ति के इस कठिन समय में जगजीवन राम, सरदार हरिहर सिंह, रामानन्द तिवारी, अम्बिका शरण सिंह आदि ने नेतृत्व किया।[22] 1942 की अगस्त क्रांति के बाद 1947 के 15 अगस्त तक शाहाबाद की जनता पर जोर जुल्म चलता रहा। गाँवों पर जुर्माने लगाये गये और लोमहर्षक दमन हुआ। इस तरह हम कह सकते हैं कि 1942 का आन्दोलन में शाहाबाद के छात्र एवं नवयुवक सबसे अगली कतार में थे। उन्होंने आन्दोलन में व्यक्तिगत हित अहित की परवाह नहीं की और देश की स्वतंत्रता के लिए बड़े से बड़े बलिदान के लिये तत्पर रहे।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची:-


1. प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल को जनरल वावेल का पत्र, 16 फरवरी, 1942
2. शाहाबाद के जिलाधिकारी का आयुक्त को पत्र, 25 दिसम्बर, 1941
3. चंद्र, बिपिन एवं अन्य, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ-308
4. दत्त, डॉ० के० के०, बिहार में स्वतंत्रा आन्दोलन का इतिहास, पटना, 1999, खण्ड-3, पृष्ठ-10
5. नेहरू, जवाहरलाल, द डिस्कवरी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 1961, पृष्ठ-387-399
6. दत्त, के० के०, बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, पटना, 1999, खंड-तीन, पृष्ठ-28
7. वही, पृष्ठ - 28
8. तेन्दुलकर, डी० जी० पूर्व उद्वृत खण्ड - 6 (1962 संस्करण) पृष्ठ - 83
9. नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 397, पृष्ठ- 397
10. हरिजन, 15 मार्च और 29 मार्च 1942
11. शुक्ल राम लखन, आधुनिक भारत का इतिहास 1997, पृष्ठ-832
12. राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी एण्ड बिहार, पृष्ठ -120
13. नारायण, प्रो० बलदेव, अगस्त क्रांति, पटना, मार्च 1947, पृष्ठ -34-35
14. वही, पृष्ठ-45
15. लाल, सुंदर, भारत में अंग्रेजी राज, नई दिल्ली, 1961,पृष्ठ-72
16. नारायण, प्रो० बलदेव, वही, पृष्ठ -81
17. वही, पृष्ठ -162
18. वही, पृष्ठ -165
19. वही, पृष्ठ -247
20. द सर्चलाइट, 5 फरवरी, 1943
21. नारायण, प्रो० बलदेव, वही, पृष्ठ-305
22. वही, पृष्ठ -305


❖❖❖